वर्ष 14 अंक 262
पृष्ठ 26
देहरादून, शुक्रवार
21 जनवरी 2011
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 2.00

दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

तुलाज इंस्टीट्यूट में काव्यपाठ करते अशोक चक्रधर।

तू अगर दरिंदा है तो मसान तेरा है...

कवि सम्मेलन

- तुलाज इंस्टीट्यूट में बही काव्य रसधार, दिग्गज कवियों ने पढ़ी कविताएं
- अशोक चक्रधर, पॉपुलर मेरठी, अनामिका अंबर, नदीम शाद, सरिता शर्मा व सौरभ जैन ने बांधा समा

देहरादून: 'तू गर दरिंदा है तो ये मसान तेरा है, अगर परिंदा है तो सारा आसमान तेरा है' कविता के माध्यम से कवि अशोक चक्रधर ने छात्रों को सामाजिक मूल्यों का महत्व बताया। गुरुवार की शाम तुलाज इंस्टीट्यूट में उत्तराखंड तकनीकी विवि के कुलपति प्रो. दुर्ग सिंह चौहान व संस्थान के चेयरमैन सुनील जैन ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कवि सम्मेलन का विधिवत शुभारंभ किया। कवि अशोक चक्रधर ने 'श्रद्धा हो भाव हो सीखने की चाह हो, एजाज पॉपुलर मेरठी ने 'अजब नहीं जो तुक्का भी तीर हो जाए, सौरभ जैन ने 'वंदेमातरम नहीं विषय विवाद का, मजहबी द्वेष का ना ओछे उन्माद का' नदीम शाद ने 'ले साकिया तेरे सागर को मारकर ठोकर, डॉ. सरिता शर्मा ने 'लहर जैसी चपलता तो मुझमें भी है, अनामिका अंबर ने 'शाम भी खास है, वक्त भी खास है, आदि रचना सुनाई। इस मौके पर कुलपति प्रो. डीएस चौहान व चेयरमैन सुनील जैन, सिल्की जैन, निदेशक एसके गुप्ता, जीजी गर्ग आदि मौजूद थे।

नगर संस्करण, पृष्ठ 16+4 (सूबी मसाला), वर्ष-4, अंक-1177, मूल्य ₹ 2.00
● देहरादून ● नई दिल्ली ● लखनऊ ● गोरखपुर ● पटना
राष्ट्रीय सहारा
सच कहने की हिम्मत
शुक्रवार, देहरादून, 21 जनवरी 2011 राष्ट्रीयता । कर्तव्य । समर्पण www.rashtriyasahara.com

काव्य रस में डूबा तुलाज

जमकर उठाया आनंद

देहरादून (एसएनबी)। श्रद्धा हो भाव हो, सीखने की चाह हो तो धरती के कागज पे, लकड़ी की कलम से हो सकती है चित्रकारी..। कुछ इसी अंदाज में कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को कभी हंसाया तो कभी देश के वर्तमान हालत पर सोचने को मजबूर कर दिया। मौका था तुलाज इंस्टीट्यूट में आयोजित कवि सम्मेलन का जिसका शुभारंभ उत्तराखंड तकनीकी विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर डा. डीएस चौहान और इंस्टीट्यूट के चेयरमैन सुनील कुमार जैन ने दीप प्रज्वलित कर किया।

बृहस्पतिवार को काव्य संध्या का आगाज प्रसिद्ध हास्य कवि डा. अशोक चक्रधर ने इस अंदाज में किया 'तू गर दरिन्दा है तो ये मसान तेरा है, अगर परिन्दा है तो ये आसमान तेरा है..। हास्य के साथ श्रंगार और वीर का जो दौर चला तो हॉल में बैठे हर व्यक्ति ठहाके लगाने के साथ ही देशभक्ति के रंग में डूब गया। उन्होंने छात्रों को बदलते सामाजिक व राजनीतिक परिदृश्य से हास्य के माध्यम से रूबरू कराने के साथ ही आधुनिकता के साथ कम हो रहे सामाजिक मूल्यों का पाठ पढाया साथ ही उन्होंने छात्र-छात्राओं को अपनी कविता के माध्यम से शिक्षा का महत्व भी बताया।

- तुलाज इंस्टीट्यूट में कवि सम्मेलन का आयोजन
- प्रतिभाशाली छात्रों को किया सम्मानित

इसके बाद कवि एजाज पॉप्यूलर ने फरमाया कि 'अजब नहीं जो तुक्का भी तीर हो जाए, फटे जो दूध तो फिर वो पनीर हो जाए, मवालियों को न देखा करो हिकारत से, न जाने कौन सा गुंडा वजीर हो जाए' सुनाकर श्रोताओं की खूब वाह वाही बटोरी। वहीं वीर रस के कवि डा. सौरभ जैन सुमन ने देशभक्ति से ओत-प्रोत कविताएं सुनाकर छात्रों में जोश भर दिया। उन्होंने जोशीले अंदाज में सुनाया वन्दे मातरम नहीं विषय है विवाद का मजहबी द्वेष का ना ओछे उन्माद का, वन्दे मातरम कुर्बानियों का ज्वार है..सुनाकर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

प्रसिद्ध कवि नदीम "शाद" ने अपने अंदाज में 'ले साकिया तेरे सागर को मारकर ठोकर, मैं जा रहा हूं तेरे दर मारकर ठोकर वो क्या रुकेगा भला चार बून्द की खातिर जो आ रहा है समन्दर को मार कर ठोकर..कविता से पूरे माहौल को महका दिया। कवि सम्मेलन के दूसरे पहलू के रूप में प्रसिद्ध गीतकार, गजलकार व श्रंगार रस की कवियत्री डा. सरिता शर्मा ने अपनी कविता लहर जैसी चपलता तो मुझमें भी है, अनकही

कवि सम्मेलन में काव्य पाठ करते कवि।

एक विकलता तो मुझमें भी है मैं नहीं हूं किनारों में सिमटी मगर एक समन्दर मचलता तो मुझमें भी है..से समा बांधा दिया। कवियत्री डा. अनामिका अम्बर ने फरमाया कि शाम भी खास है वक्त भी खास है, मुझको एहसास है, तुझको एहसास है इससे ज्यादा हमको और क्या चाहिए। सम्मेलन के बाद तुलाज इंस्टीट्यूट के चेयरमैन सुनील कुमार जैन व यूटीयू के वीसी. डा. डीएस चौहान ने संस्थान की छात्रा रुचि जैन को बीटेक परीक्षा में 85.16 प्रतिशत अंको के साथ यूनिवर्सिटी में तृतीय स्थान लाने पर पुरस्कृत किया।

इस अवसर पर तुलाज के डायरेक्टर एसके गुप्ता, संस्थान के एडवाइजर जीजी गर्ग, एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर सिल्की जैन सहित छात्र-छात्राएं व शिक्षक उपस्थित थे।